1

''क्या यहोवा की ओर से कोई वचन पहुंचा है?''

यिर्मयाह को राजा सिदकिय्याह की विनती पर कैद से लाया गया था। राजा सिदकिय्याह की दिलचस्पी बेशक परमेश्वर का वचन सुनने में नहीं थी। परन्तु वह यह सुनने का उत्सुक था कि बाबुल के लोगों के हाथ में यहूदा के भविष्य के बारे में नबी क्या कहता है। राजा सिदकिय्याह ने यिर्मयाह से पूछा, ''क्या यहोवा की ओर से कोई वचन पहुंचा है?'' (यिर्मयाह 37:17)। परमेश्वर की सेवा करने की चाह करने पर पूछने के लिए यह प्रश्न हमेशा प्रासंगिक रहता है। परन्तु राजा सिदकिय्याह के विपरीत हम जो कुछ भी जानना चाह रहे हों, उस पर ''यहोवा की ओर से वचन'' सुनने की पूरी मंशा से पूछना चाहिए। जब हम आराधना में उसके पास आते हैं तो क्या परमेश्वर हमें कोई निर्देश देना चाहता है?

एल्फ्रैड पी. गिबस ने आराधना में होने वाली बातों के नमूनों के रूप में दोनों नियमों से आराधना के कई उदाहरण दिए।[1] इस अध्ययन में कई पाठों के लिए गिबस की समझ से लेते हुए हम इन उदाहरणों में से दो पर ध्यान लगाएंगे: एक तो पुराने नियम से है और दूसरा नये नियम से। इन्हें उनकी चौंकाने वाली समानताओं के कारण चुना गया है, जिससे आराधना में जो परमेश्वर हम से चाहता है, उसकी नकल मिलती है।

एक तो परमेश्वर द्वारा अब्राहम को बलिदान के रूप में मोरिय्याह देश में अपने पुत्र को भेंट करने के लिए बुलाए जाने के समय की गई आराधना है (उत्पत्ति 22)। दूसरी नवजन्मे राजा यीशु को प्रणाम करने के लिए पूर्व से आए बुद्धिजीवियों की आराधना है (मत्ती 2)। मानना पड़ेगा कि इनमें से कोई भी आराधना सभा का उदाहरण नहीं है, बेशक दोनों में इस बात की समझ पाई जाती है कि लोगों ने परमेश्वर की ओर से स्पष्ट निर्देश मिलने पर कैसे आराधना की। सच्ची आराधना में चाहे वह कहीं भी क्यों न हो, कुछ विशेषताएं पाई जाती हैं।

आराधना के इन उदाहरणों में पहली विशेषता यह है कि वे परमेश्वर के निर्देश से दिए गए थे। यदि परमेश्वर अब्राहम को स्पष्ट निर्देश न देता तो उसका मोरिय्याह में जाने का कोई कारण नहीं होना था (उत्पत्ति 22:2)। यदि परमेश्वर अगुआई करने वाला तारा न देता तो ज्योतिषियों के लिए बैतलहम, जहां यीशु जन्मा था, की लम्बी यात्रा करने का कोई तुक नहीं था (मत्ती 2:2)। हम यह तो स्पष्ट नहीं जानते कि वे उस तारे के पीछे कैसे चले या उन्हें यीशु के जन्म स्थान तक कैसे पहुंचाया गया था। हम केवल इतना ही जानते हैं कि परमेश्वर ने तारे का इस्तेमाल उनकी अगुआई करने के लिए किया। तारे के बारे में हम और जो भी निष्कर्ष निकालें, उसमें एक बात स्पष्ट है कि यह ईश्वरीय अगुआई को दर्शाता था।

इन उदाहरणों में दूसरी विशेष बात यह है कि हर एक परमेश्वर के निर्देश को विश्वास से मानना था। अब्राहम बिना संदेह किए या हिचकिचाहट के आज्ञा मानने के लिए चल पड़ा था। अगली सुबह वह जल्दी उठा अपने गधे पर काठी डाली और लकड़ियां काटीं। फिर उसने अपने साथ चलने के लिए दो सेवकों और इसहाक को बिस्तर से जगाया और मोरिय्याह की ओर चल पड़ा।

आइए परमेश्वर के वचन के अनुसार आराधना की इन तथा अन्य विशेषताओं को और बारीकी से देखते हैं।

आराधना की अगुआई परमेश्वर की ओर से होती है

मनुष्य को दिए गए परमेश्वर के सबसे पहले निर्देशों में आराधना के बारे में निर्देश थे (उत्पत्ति 4:3-8; इब्रानियों 11:4)। पहली हत्या आराधना के लिए परमेश्वर के निर्देशों को पूरा न कर पाने पर कैन के क्रोध के कारण हुई थी। बाइबल की पूरी कहानी अपने साथ मनुष्य को मिलाने के लिए परमेश्वर की पहल का प्रकाशन है; यह दिखाता है कि किस प्रकार मनुष्य ने उस पहल को स्वीकार किया। असल में बाइबल की हर पुस्तक में आराधना पर जानकारी और/या निर्देश है।

न तो परम्परा और न निजी प्राथमिकता हमारा अगुआई करने वाला तारा होना चाहिए, न ही हमारी अगुआई उससे होनी चाहिए, जो हमें अच्छा अहसास कराता है। परमेश्वर ने हमें यह कभी नहीं बताया कि हमें कैसा महसूस करना चाहिए। वह हमें यह बताता है कि हमें कैसे काम करना है। भावना इस बात का बहुत अच्छा संकेत नहीं है कि आराधना में क्या होना चाहिए। भावनाएं अलग-अलग व्यक्ति की अलग-अलग हो सकती हैं। जो बात एक को उत्तेजित करती है वही किसी और को अस्वीकृत हो सकती है। आराधना केवल भावनाओं की उमंग नहीं है। न ही यह केवल दिमागी अभ्यास है। सच्ची आराधना हमारे अस्तित्व के हर पहलू अर्थात देह, प्राण और आत्मा में जाती है। यह हमें पकड़कर सर्वशक्तिमान की उपस्थिति में हमारे पूरे अस्तित्व को रखती है, जहां हम उसकी महिमा के चमकदार प्रकाश में आनन्द ले सकते हैं।

आराधना आज्ञाकारी मन से निकलती है

लैव्यव्यवस्था की पुस्तक याजकों के परमेश्वर के लोगों की ओर से याजकों की प्रतिदिन की सेवकाई के लिए दिशा-निर्देश ठहराने के लिए लिखी गई थी। उनके अपवित्र लोगों और पवित्र परमेश्वर के बीच मध्यस्थता करने के समय पवित्रता बनाए रखने पर बहुत ज़ोर दिया गया था। लैव्यव्यवस्था अधिकतर लोगों के लिए न तो समझना आसान है और न ही पढ़ना कोई दिलचस्पी भरा। आम पाठक के लिए पुराने नियम की यह पुस्तक अप्रासंगिक और आज के लोगों की पहुंच से बाहर लग सकती है; तौ भी लैव्यव्यवस्था की बात का सार बिल्कुल उसी पर केन्द्रित है या जहां किसी भी पीढ़ी में परमेश्वर के लोगों को होना चाहिए। यह परमेश्वर तक पहुंचने, परमेश्वर से सम्पर्क बनाने और उसके साथ पवित्र उपस्थिति बनाए रखने के बारे में है। परमेश्वर तक पहुंचना मनुष्य को दी गई सबसे बड़ी आशीष और एक गम्भीर बात है। हमें उसके पास लापरवाही से कभी नहीं आना चाहिए, न ही हमें अपनी शर्तों पर ऐसा करने का प्रयास करना चाहिए।

याजकाई के लिए विस्तृत नियमों और नियमावलियों के बीच परमेश्वर ने याजकों को अपने पहले दिन का काम आरम्भ करने के ढंग की कहानी बताने के लिए समय निकाला (लैव्यव्यवस्था 9:8-24)। दिन के विभिन्न बलिदानों के अन्त में, ''यहोवा के सामने से आग निकलकर चरबी सहित होमबलि को वेदी पर भस्म कर दिया; इसे देखकर जनता ने जय जयकार का नारा मारा, और अपने-अपने मुंह के बल गिरकर दण्डवत किया'' (लैव्यव्यवस्था 9:24)। इसके बाद होने वाली घटना ने आनन्द और जश्न के दिन को शोक में बदल दिया। कहानी दो आयतों में ही बताई गई है, परन्तु इसकी गम्भीर शिक्षा आसानी से भुलाई जाने वाली नहीं है। हारून के दो पुत्र नादाब और अबीहू,जो याजक थे और जिन्होंने दिन भर के सभी बलिदानों में हारून का साथ दिया था, परमेश्वर तक ऐसी भेंट लेकर जाने का प्रयास किया जो परमेश्वर के निर्देशानुसार नहीं थी (लैव्यव्यवस्था 10:1, 2)। वही आग जो बलिदान को भस्म करने के लिए परमेश्वर की ओर से आई थी, उसने नादाब और अबीहू को वेदी पर भस्म कर दिया, ''और उन दोनों को भस्म कर दिया और वे यहोवा के सामने मर गए।'' जो आग उन्होंने भेंट की थी, वह ''बाहरी'' या ''अपवित्र'' थी। परमेश्वर ने उसकी आराधना में इस्तेमाल होने वाली आग के बारे में उन्हें विशेष निर्देश दिए हुए थे। उन्होंने उन निर्देशों का पालन नहीं किया। एक टीकाकार ने कहा है, ''नये-नये बने उन याजकों ने भली मंशाओं से जो भी किया उसकी आज्ञा परमेश्वर ने नहीं दी थी और ऐसा करके उन्होंने वह किया, जिसकी उसने मनाही की थी।''[2] एक और ने कहा, ''परमेश्वर इस्राएल को और सब भावी पीढ़ियों को शक्तिशाली ढंग से कह रहा था कि वह आराधना अपनी शर्तों पर चाहता है।''[3] इन लोगों ने अनुमान लगाकर काम किया था। ऐसा करना बहुत आसान है। हम अनुमान लगाकर यह सोचते हुए काम कर सकते हैं कि जो कुछ हम कर रह रहे हैं वह बिल्कुल परमेश्वर की इच्छा के अनुसार है। गम्भीर सच्चाई यह है कि यदि परमेश्वर ने कहा है तो हमें उसे सुनने को तैयार रहना आवश्यक है। आराधना तभी मान्य होती है जब यह ईश्वरीय प्रकाशन के आज्ञाकारिता से मानते हुए हो।

आराधना शिष्टाचार से बढ़कर है, परन्तु हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि परमेश्वर ने हमें विशेष निर्देश दिए हैं, जिन्हें हमारे लिए मानना आवश्यक है। वाचा के सन्दूक के साथ इस्राएल का अनुभव इस सच्चाई का एक स्पष्ट उदाहरण देता है। तम्बू और इसमें रखी वस्तुओं का इस्तेमाल आराधना के लिए किया जाता था। एक वस्तु जो परमेश्वर की उपस्थिति को सबसे अधिक दर्शाती थी वह था वाचा का सन्दूक। सन्दूक के ऊपर प्रायश्चित के ढकने पर करूब के बीच में परमेश्वर का वास था। जब एली याजक था, जो फिलस्तीनियों ने सन्दूक को कब्जे में ले लिया था; परन्तु जल्द ही उन्हें इसे वापस भेजना पड़ा क्योंकि जहां भी सन्दूक रखा जाता वहां उस क्षेत्र में फिलस्ती लोगों पर शाप पड़ता था। फिलस्तियों के पास सन्दूक केवल सात महीने रहा। यह न जानते हुए कि इसे इस्राएलियों को कैसे लौटाना है, फिलिस्ती याजकों और भविष्यवक्ताओं ने एक नई गाड़ी बनाने का निर्णय लिया। उस गाड़ी पर उन्होंने सोने के उपहारों के साथ उस सन्दूक को भी रखना था। उन्होंने दूध देने वाली दो गायों को जिन्हें कभी जोया नहीं गया था, गाड़ी को ले जाने की योजना बनाई, फिर उनके बछड़े उनसे दूर कर दिए। जब गायों को खुला छोड़ा गया तो स्वाभाविक है कि उन्हें अपने बछड़ों को ढूंढ़ने के लिए उनके पास जाना था। फिलस्तियों ने पहले से सोच लिया था कि यदि गायें बेतशेमेश के मार्ग पर जाती हैं तो यह इस बात का संकेत होगा कि उनमें ऐसी बड़ी

विपत्ति लाया है वरना उन्हें पता चल जाएगा कि उन्हें शाप नहीं मिला था, बल्कि उनका दुर्भाग्य केवल संयोग था। गायें सीधी बेतशेमेश को चली गईं। वहां से सन्दूक किर्यतैयारीन में अबीनादाब के घर में ले जाया गया, जहां यह बीस साल तक रहा।

जब दाऊद राजा बना तो परमेश्वर की उपस्थिति की इच्छा ने उसे परमेश्वर का सन्दूक यरूशलेम में लाने के लिए उकसाया। उसने अपने सहस्रपतियों और प्रधानों से सलाह ली। वे इस बात पर सहमत हुए कि सन्दूक यरूशलेम में होना चाहिए। क्योंकि बहुत देर से वे परमेश्वर के पास उस जगह नहीं गए थे, जहां उसने अपना नाम स्थापित किया था। बीस साल पहले जैसे फिलस्तीनियों ने किया था वैसे ही इस्राएलियों ने नई गाड़ी बनाकर उज्जा और अह्यो उसे हांक कर लाए। वे बड़े जश्न के साथ, गाते और बजाते हुए उसे लेकर आए। जब वे नाकौन के खलिहान पर पहुंचे तो बैल लड़खड़ा गए। स्पष्टतया यह सोचकर कि सन्दूक गाड़ी से नीचे गिर जाएगा, उज्जा ने सन्दूक को सहारा देने के लिए अपना हाथ बढ़ाया। उसी समय परमेश्वर के सामने वह मर गया (2 शमुएल 6:1-10; 1 इतिहास 13:1-10)। 2 शमुएल में लिखा मिलता है कि ''परमेश्वर ने उसके दोष के कारण उसको वहां मारा'' (6:7)।

इस्राएलियों ने अपने सहस्रपतियों और प्रधानों से सलाह ली थी, पर न तो दाऊद ने और न उसकी सहायता करने वालों ने परमेश्वर से पूछा था। पूरी घटना दोषपूर्ण थी, इसलिए नहीं कि वे पाखण्डी थे, बल्कि इसलिए क्योंकि उन्होंने सन्दूक को रखने में परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध काम किया। दाऊद क्रोध में भी था और डरा हुआ भी, क्योंकि उसे मालूम नहीं था कि सन्दूक को यरूशलेम कैसे ले जाया जाना है। इसे तीन महीने तक ओबेदेदोम के घर में रखा गया था।

जब तक दाऊद ने यह नहीं सुना कि परमेश्वर ने ओबेदेदोम के घराने को आशीष दी है तब तक उसने सन्दूक को यरूशलेम ले जाने का नये सिरे से कोई प्रयास नहीं किया। परन्तु इस बार स्पष्टतया उसने सन्दूक को ले जाने का सही ढंग पता लगा लिया था। उसने इस बात को समझा कि जो त्रासदी आई थी, वह इसलिए थी क्योंकि याजक पहली बार नहीं लाए थे, क्योंकि उन्होंने परमेश्वर से नहीं पूछा था कि वह सन्दूक को कैसे ले जाना चाहता है (1 इतिहास 15:13)। उसे समझ आया कि इसे केवल लेवी ही ले जा सकते थे, ''क्योंकि यहोवा ने उनको इसलिए चुना है कि वे परमेश्वर का सन्दूक उठाएं और उसकी सेवा टहल सदा किया करें'' (1 इतिहास 15:2ख)।

दाऊद ने इस घटना का जश्न मनाने के लिए इस्राएलियों को फिर इकट्ठा किया। परन्तु इस बार उसने अपनी सहायता के लिए हारून के पुत्रों के 862 वशंजों को बुलाया। उसने याजकों को बुलवाया और उनसे कहा, ''तुम तो लेवीय पितरों के घरानों में मुख्य पुरुष हो; इसलिये अपने भाइयों समेत अपने-अपने को पवित्र करो, कि तुम इस्राएल के परमेश्वर यहोवा का सन्दूक उस स्थान पर पहुंचा सको जिसको मैं ने उसके लिये तैयार किया है'' (1 इतिहास 15:12)। इस बार सन्दूक को ले जाना सफल रहा क्योंकि लेवियों ने ''उस आज्ञा के अनुसार जो मूसा ने यहोवा का वचन सुनकर दी थी'' (1 इतिहास 15:15) उसे उठाया था। दाऊद की तरह हम भी यदि परमेश्वर की उपस्थिति में रहने की तड़प रखें तो हम परमेश्वर के सिंहासन के निकट रहने के दाऊद के गम्भीर परन्तु गलत ढंग को सीख सकते हैं।

आराधना परमेश्वर केन्द्रित है

बाइबल का कोई छात्र यह सवाल नहीं करेगा कि आराधना परमेश्वर की ही होनी है। केवल परमेश्वर को ही हम ''स्तुतिरूपी बलिदान अर्थात उन होंठों का फल जो उसके नाम का अंगीकार करते हैं'' (13:15) चढ़ा सकते हैं। आराधना वह केन्द्र है, जिसमें परमेश्वर के लिए लोगों के रूप में हम हैं। ''जैसा मैं चाहता हूं वैसा हो'' से भरी फिलास्फी वाले संसार में रहने वाले लोगों के लिए उसके निर्देश को जानना एक बहुत कठिन प्रक्रिया हो सकती है। हम उस अर्थ में सोचते हैं, जिससे हम अधिक से अधिक लोगों को आकर्षित कर सकें और उन्हें वापस लाते रहें। हो सकता है कि हम यह मान लें कि जितने अधिक लोग होंगे उतना ही आराधना में आनन्द आएगा। हम यह सोचने की परीक्षा में पड़ सकते हैं, जिससे आराधना में अगुआई करने वालों को परमेश्वर द्वारा दिए गए गुणों को दिखाने का अवसर मिल जाए। जब हम ऐसा सोचने लगते हैं तो हम आराधना के केन्द्र से हट रहे हैं। अपनी आराधना के केन्द्र पर से ध्यान हटाने से हमारी आराधना दिखावटी और कम आत्मिक सुधार करने वाली आराधना ही होगी। ऐसी आराधना आत्मा के बजाय शरीर को अधिक आकर्षित करती है। परमेश्वर के सिहांसन के सामने शारीरिक इच्छा के लिए कोई जगह नहीं है। आराधना में जो कुछ हम करते हैं यदि वह शरीर को आकर्षित करता है तो हम वास्तव में आराधना नहीं कर रहे हैं। ''अपने सब अलग-अलग रूपों में स्व।''[4]

बहुत बार आधुनिकता की आवाज परमेश्वर की आवाज से ऊंचा बोलती है। संस्कृति की मांग परमेश्वर की मांगों को दबा लेती है। डेविड वेल्स ने लिखा है:

> आधुनिकता मूल्यों का आपस में जुड़ा हुआ ऐसा प्रबन्ध देती है, जिसमें हर व्यक्ति के मन पर आक्रमण किया और उसमें बस गया है। आधुनिकता मानवीय भूख, विचार की प्रक्रियाओं और मूल्यों को फिर से बनाने के लिए अपनी शक्ति में अभूतपूर्व है।[5]

बेशक, परमेश्वर द्वारा बनाई गई सच्ची आराधना आराधक के लिए संतुष्टि और भरपूरी देने वाली है, फिर भी अपने आप में भरपूर होने के विचार में अपने आप में एक समस्या पाई जाती है। इस समस्या के लिए धर्मशास्त्रीय शब्द ''एंथ्रोपोसेंट्रिसिज़्म'' है। यह लम्बा सा शब्द, जिसका सरल अर्थ ''मनुष्य में केन्द्रित''[6] है, हमारे उस भाग को दर्शाता है, जिसे परमेश्वर की सुनना कठिन लगता है, यानी हमारे उस भाग को जो शरीर के वश में होना चाहता है। शरीर को परमेश्वर के सिंहासन के सामने कोई भरपूरी नहीं मिलती।

जब आराधना होती है, तो परमेश्वर ''जो धर्म के भूखे और प्यासे हैं'' (मत्ती 5:6) उन्हें तृप्त करने की तरह आराधक का कटोरा भर देता है। परमेश्वर द्वारा भरा जाना आराधना के नाम में मनोरंजन के लिए अपनी निजी भूख मिटाने जैसा नहीं है। आराधना मनुष्य की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए होनी चाहिए और होती है, परन्तु भौतिक या भावनात्मक अनुभव के काल्पनिक स्तर तक नहीं। सच्ची आराधना भावनात्मक आवेश में आकर उत्तेजित आराधकों के लिए कोई संगीत सभा या अभिनय करना नहीं है। इसके बजाय इसमें हमारे उद्धारकर्त्ता और परमेश्वर को महिमा और आदर देने के लिए आत्मा में भरकर उसकी महिमा करना है, जिसके बदले में आराधना करने वाला उसकी सामर्थ और उपस्थिति से भर जाता है। यह अपनी खूबी और महत्व

को बढ़ाना नहीं, बल्कि परमेश्वर केवल परमेश्वर को महिमा और ऊंचा किए जाने के योग्य मानने के लिए है।

जब हमारे ध्यान का केन्द्र परमेश्वर बन जाता है, तो हम परमेश्वर के ध्यान का केन्द्र बन जाते हैं। जब हम अपने आप को दीन करते हैं तो वह हमें ऊंचा करता है (याकूब 4:10)। हम परमेश्वर की आराधना इसलिए नहीं करते कि वह हमें अच्छी-अच्छी चीज़ें देगा और न ही परमेश्वर की हमारी आराधना उससे यह सुनिश्चित कराने के लिए है कि हमारे साथ कुछ ''बुरा'' नहीं होगा। हम परमेश्वर की आराधना इसलिए करते हैं क्योंकि वह परमेश्वर है।

वेंडल विल्लिस ने सुझाव दिया है कि आराधना तीन स्तर पर होती है।[7] पहले स्तर को उसने ''हसीन अनुभव'' अर्थात भय के बोध का नाम दिया। यह वह स्तर है, जिसमें हमें अपना इनकार करना और परमेश्वर को अपने ढंग से काम करने देना सबसे कठिन लगता है। ऐसी आराधना में अच्छा अहसास होता है, यानी यह सुन्दरता और भव्यता के हमारे व्यक्तिगत बोध को आकर्षित करता है। विल्लिस ने दूसरे को ''नैतिक स्तर'' नाम दिया। इस स्तर पर परमेश्वर के लिए हमारा धन्यवाद एक सक्रिय प्रत्युत्तर तक चला जाता है। तीसरे स्तर को विल्लिस ने ''धार्मिक'' कहा है। इस स्तर पर हमें पता होता है कि परमेश्वर ने अपने आप को और अपने उद्देश्य को हमारे ऊपर प्रकट करने का श्रेय लिया है। यह अहसास ऐसे प्रत्युत्तर की मांग करता है, जो उसकी खूबी को मांगता हो। ऐसा अहसास केवल परमेश्वर की बात सुनकर और उसके वचन से मेल खाते ढंग के अनुसार उसे उत्तर देकर ही हो सकता है।

सारांश

कुछ लोग चाहे बाइबल को पुरानी पड़ चुकी और सांस्कृतिक रूप में किसी काम की न मानते हों, परन्तु आराधना में हमारे व्यवहार के लिए आज भी परमेश्वर का वचन ही है। हमारा सांस्कृतिक माहौल या लोगों के विचार चाहे जो भी क्यों न हों, हमारे व्यवहार को संचालित करने के लिए परमेश्वर का वचन ही होना आवश्यक है। आराधना, अराधक को ऊंचा उठाने और उसमें सुधार लाने के लिए होनी चाहिए। (1 कुरिन्थियों 14:3-5, 12, 17, 26, 31 पर विचार करें।) परन्तु उन विश्वासियों को जो प्रभु में सुरक्षित हैं, ऊंचा उठाने वाली आराधना उन लोगों के लिए जो परमेश्वर को नहीं जानते उबाऊ और बेकार लग सकती है। जब परमेश्वर के लोग अपने जीवनों के केन्द्र में परमेश्वर-केन्द्रित, वचन-केन्द्रित, आराधना को रखते हैं, तो उनके बीच में आशिषें अपने आप गिरती हैं। अविश्वासियों या किनारे पर रहने वाले विश्वासियों को सचमुच यदि कोई चीज़ खींचेगी तो वह इस घटना के लिए उनका गवाह होना है। हमारी आराधना का एक कारण परमेश्वर-केन्द्रित होना और उसके वचन की शिक्षाओं को दिखाना है ताकि सभा में आए अविश्वासी लोग वचन को सच मानें और उन्हें मालूम हो कि परमेश्वर निश्चित रूप से हमारे बीच में है (1 कुरिन्थियों 14:24, 25)।

रॉल कार्ल्सन का कथन इस सबक के विचार को ठीक ही संक्षिप्त करता है: ''यदि हमें मसीही संस्कृति को बनाए रखना है और इसका अर्थ वर्तमान प्रवृत्तियों को निकालना है तो हमें परमेश्वर के वचन पर फिर से ध्यान लगाना होगा। ...''[8]

टिप्पणियां

[1]एल्फ्रेड पी. गिबस, *वरशिप: द क्रिश्चियन 'स हाइट्स ओक्यूपेशन,* द्वितीय संस्करण (कैनसस सिटी, कैनसस: वाल्टरिक पब्लिशर्स, तिथि नहीं), 19-25. [2]एफ. मेरिक, इन द *पुलपिट कमैंट्री,* अंक 2, *लैव्यव्यवस्था और गिनती,* संस्करण, एच. डी. एम. स्पेनस, एंड जोसेफ एस. एक्सल (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कंपनी, 1950), 149. [3]ओबरे जॉनसन, *म्यूजिक मैटर्स इन द लार्ड 'स चर्च* (नैशविल्ले: ट्वंटियथ सैंचुरी, क्रिश्चियन, 1995), 15. [4]गिब्स 216. [5]डेविड एफ. वैल्स, *गॉड इन द वेस्टलैंड: द रिएलिटी ऑफ़ ट्रुथ इन ए वर्ल्ड ऑफ़ फैडिंग ड्रीम्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कंपनी, 1994), 29. [6]जैक हेफोर्ड, *वरशिप हिज़ मैजिस्टी* (डलस: वर्ड पब्लिशिंग, 1987), 47. [7]वैंडल विल्स, *वरशिप,* द लिविंग वर्ड सीरीज़ (आस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1973), 5-6. [8]रॉन, कार्लसन, *कोमाटोस क्रिश्चिएनिटी: ए वेक-अप कॉल फ़ॉर क्रिश्चियन* (नैशविल्ले: क्रिश्चियन कम्युनिकेशन, 1989), 5.